

ॐ श्री लक्ष्मी नमः, श्री वायु पुत्राय नमः, श्री परमशक्त्यो नमः ॐ

ॐ श्री हनुमत् कृपा होइ सो ॐ

ॐ नमो भगवते
कृपा नमो भगवते

आदरणीया माता जी को

सादर सप्रेम भेंट

(५३)

❀ हनुमन्त कृपा षोडशी ❀

सब सुख आनन्द कन्द , विघ्न हरन संसृष्ट दमन ।
द्रवौ सु मारुतिनन्द , कृपा सिन्धु सन्तन सुखद ॥

प्रतिलिपि कर्ता

(वीर)

१०. १०. ७८.

रचयिता -

‘ कवि मणि कृष्णदासजी ’

आदरणीया माता जी को

सादर सलाम भेंट

(५३)

ॐ

❀ श्री सीता रामाभ्यां नमः, श्री वायु पुत्राय नमः, श्री परम गुरुभ्यो नमः ❀

❀ श्री हनुमन्त कृपा षोडसी ❀

- सौरठा -

सब सुख आनन्द कन्द , विघ्न हरन संस्रष्ट दमन ।
द्रवौ सु मारुतिनन्द , कृपा सिन्धु सन्तन सुखद ॥

प्रतिलिपि कर्ता

(वीर)

१०. १०. ७८.

रचयिता -

‘ कवि मणि कृष्णदासजी ’

ॐ दंडक छन्द ॐ

येहो च्छीर बीर कपिराज जू दया के सिन्धु,
ऐसो को समर्थ बेग जाको हम टेरिये।
बिष्यन बिडारन को जिनके सँवारन को,
शौक वन जारन को आदि रेख तैरिये॥

भने कवि कृष्ण, और और न दिखात दूजो,
हैं तैं बलहीन दीन द्वार तब बैरिये।
दोऊ कर जोर बिनै मानिये जरूर अब,
कृपा दृग कोर नाथ भेरी और टेरिये॥ १॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मंगल की मूरत अमंगल हरन हार,
 सुन्दर शरीर स्वच्छ बदन विशाल हैं।
 चन्दन सुभाल पिंग लैचन रसाल बँक,
 मृकुटी कराल अति नीकी मुख लाल हैं॥

भने कवि कृष्ण रामचन्द्र के पिथारे इत
 दीन जन रक्षान की बान सब काल है।
 कण्ठ सुचि माल है लँगोठ करि लाल है,
 सु टारै दुरव जाल बीर अँजनी को लाल है॥२॥

रक्षक सुदासन कौ मक्षक विपक्षन कौ,
 परम प्रवीन सान सुन्दर धनी रहै ।
 बीर, बरजोर रणरौर हैं प्रभाव बाँको,
 साको चार युग तैं अभिन्यता ठनी रहै ॥

भने कवि कृष्ण, कपि केशरी किशोर धीर,
 आनंद को कन्द जग बन्दता गनी रहै ।
 सबल समर्थ शूर साहसी सुजान नेकु,
 करुणानिधि करुणा को नजर बनी रहै ॥३॥

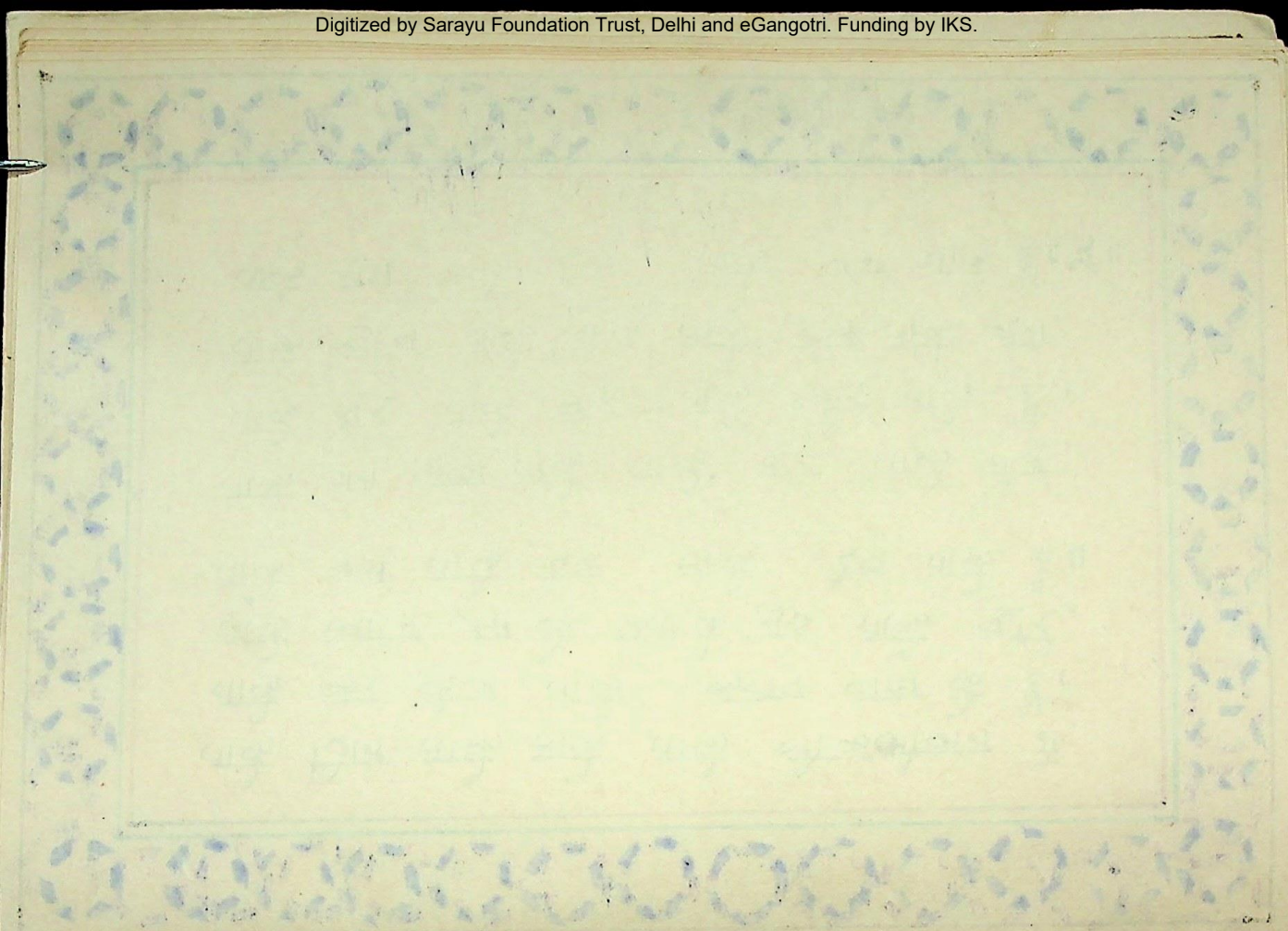
सरन तिहारी यह अरज हमारी नाथ,
 दीन हितकारी दीन जान रव्याल कीजिये।
 संकट कटैया सदा सांकरे सहेया,
 दुरव दारिद हरैया बीर अर्भे बाँह दीजिये ॥

भने कवि कृष्ण तो सो दूजी को दुनी माँहि,
 शरीरे उस गाय गाय सुधा खान पीजिये।
 कैसे भये मौन मेरी तुम खिन सुने कैन,
 येही रामदूत अब बेग सुधा लीजिये ॥४॥

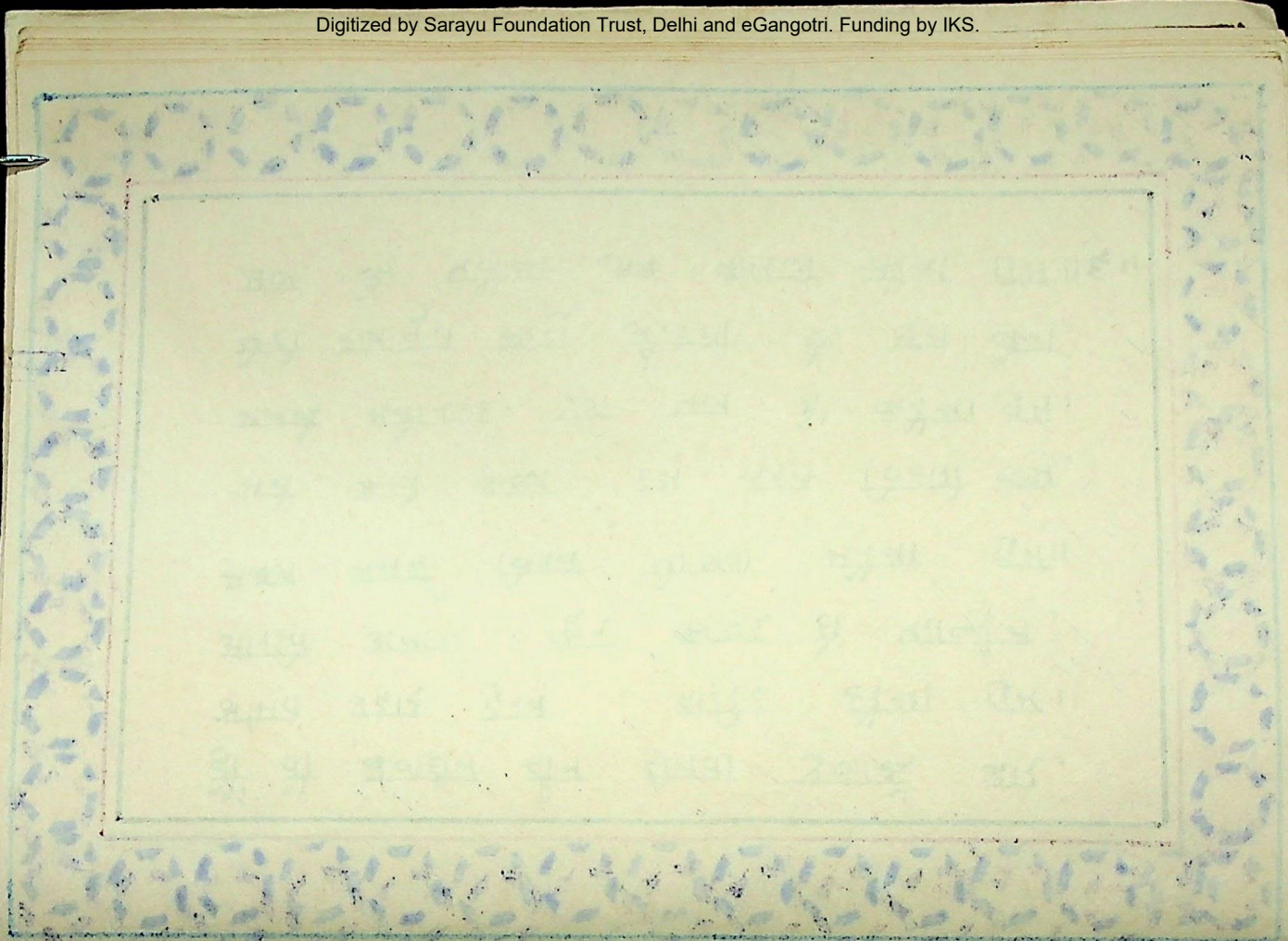
११ अथ चतुर्थः सर्गः
अथ चतुर्थः सर्गः
अथ चतुर्थः सर्गः
अथ चतुर्थः सर्गः
अथ चतुर्थः सर्गः
अथ चतुर्थः सर्गः
अथ चतुर्थः सर्गः
अथ चतुर्थः सर्गः

ताके जिन ताके साके ताके लोकलोकन में,
 ताके कर कंज ताके कल्प लता के हैं,
 ताके स्वामि जस के पताके गुरु ताके शूरि,
 ताके बल ताके देव ताके देव ताके हैं ॥

ताके जन कृष्ण, ताके ताके दृढ़ ताके मंजु,
 ताके शूर ताके वीर ताके धीर ताके हैं,
 ताके सुचि ताके दीन ताके जीव ताके जग,
 ताके राम ताके हम् ताके पग ताके हैं ॥ ५ ॥



हैं तो बलहीन दीन दीनता पुकारें द्वार,
 अमित उदार दुख दारिद हँसैया तुम।
 आरति अनाथ कूर कायर हों पराव्हीन,
 सबल समर्थ विद्वक् पोषण भँसैया तुम॥
 भने कवि कृष्ण, हम सरन तिहासी नाथ,
 मनके मनोरथ पूर्ण पल में करँसैया तुम,
 येहो रामदूत मातु अँजनी के पूत बैग,
 प्रण के पँसैया जन कादज सँसैया तुम॥६॥



कुटिल कुचाली कुबिचारी कूर पापी नीच,
 अधम अनेक जग आय जन केरे हैं।
 जाइ डार डार देवी देवता निहारे सब,
 पर न सहाइ भये कौइ कहूं मेरे हैं॥
 भने कवि कृष्ण वेद विरद बखाने भरि,
 संकर हरन मोदहू के मोद देरे हैं।
 निडर निसंक दिन दानि निरमौर देव,
 हमहें सुन नाम बीर आये सरन तेरे हैं॥६॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a letter or a page from a manuscript. The text is arranged in approximately 10 lines within a rectangular frame. The script is somewhat faded and difficult to read accurately. The text appears to be a personal communication, possibly a letter to a friend or a family member, discussing various matters and expressing emotions. The words are written in a cursive style typical of handwritten Devanagari.

बाल रवि चरयो गाल मालकें भगायो काल,
 रावण को वंश निरबंस कर जागे हैं।
 कौरव कुम्भल खंडन को पाण्डव जस मण्डन को,
 परम प्रवीन गुडाकेश रथ राजे हैं॥

भने कवि कृष्ण अब अवध विराजमान
 दीनन को लाज काज सदा साज साजे हैं।
 एक पल माहिं तीनों लोक की खबर लेत,
 ऐसे बीर तेरे वर विरद विराजे हैं॥ ८॥

सबल सुजान राम दूत समरत्थ शूर,
 भयै जन ताके जग ताके जम कूकेंगे ।
 काम क्रोध लोभ आदि जग के अनेक दुष्ट,
 मानी खल नीच एक पल ही में मूकेंगे ॥
 भनै कवि कृष्ण सदा निभयिता चित्त रामबु,
 करै मन मौज कली दूर ही ते दूकेंगे ॥
 शत्रुन के खण्डन में दीत जन मण्डन में,
 अन्जनी के नन्द वीर कबहूँ नहीं चूकेंगे ॥ ८ ॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a letter or document, enclosed in a rectangular border. The text is faint and mostly illegible due to fading or bleed-through from the reverse side. It appears to be organized into several lines of prose.

❀ भक्त मातंग दैर लीला कर दंडक छन्द ❀

तेरी कृपा पाय आगी पानी वायु बाँध सकै,
तेरी कृपा पाय आय मृत्यु होत चेरी है।
हैनी अनहैनी अनहैनी हैनी होय बैग,
जाहिर जहाँन हनुमान बाँन तेरी है॥

दैव लोक, नर लोक, पन्नग, पाताल लोक,
औरह अनन्त लोक तेरी कृपा ऐसी है।
जौन अभिलाष लाय सन्मुख सुनावै तौन,
कृष्ण कवि कृपा होत लागै नाहिं देरी है॥१०॥

महाराज महाराज महाराज महाराज महाराज
महाराज महाराज महाराज महाराज महाराज
महाराज महाराज महाराज महाराज महाराज
महाराज महाराज महाराज महाराज महाराज
महाराज महाराज महाराज महाराज महाराज
महाराज महाराज महाराज महाराज महाराज
महाराज महाराज महाराज महाराज महाराज
महाराज महाराज महाराज महाराज महाराज
महाराज महाराज महाराज महाराज महाराज

जाकी ओर नजर उठाये के निहार दैत,
 ताकी ताकी इष्टि को समष्टि इष्टि ताकी है।
 ताकी ओर कौन बरजोर के निहार सके,
 जाने सरनागति तनक तेरी ताकी है॥
 ताकी जिन ताकी रति काकी गति कथबै में,
 अकथ अनूप रूप काकी रति सुता की है।
 ताकी दीन कृष्णादास सरन असौच सदा,
 अति सुख देन रेन जगै बाँह जाकी है॥१९॥

केसरी किशोर बन्दी और दया इष्टि कौरि,
 जाकी और होत ताके मिरत अंदेसे हैं।
 कामादिक सौग कलिकाल कूर गृह सर्व,
 तेरो नाम लिखे बीर तुरत नसे से हैं॥
 कौन के बिरद की विशेषता है तेरे इव,
 जाकी शरण लेत जन मोद में लसे से हैं।
 दीन कृष्णदास कौन तेरे बिन और नीत
 तेरी कृपा इष्टि की सुरतन हमसे है॥१२॥

Handwritten text in Devanagari script, enclosed in a rectangular border. The text is arranged in approximately 10 lines, though it is significantly faded and difficult to read. The script appears to be a form of Hindi or Sanskrit.

कर्मदाग दाग दैत जग तैं बिराग दैत,
 सुदृष्टि सम्पत्तादि दैत आनंद अपार है,
 ज्ञान दैत, ध्यान दैत, भक्ति दैत, शक्ति दैत,
 ऋद्धि दैत, सिद्धि दैत हरत बिकार है॥
 नेम दैत प्रेम दैत सर्व विधि क्षेम दैत,
 शिष्याश्रम दर्श दैत जीवन आधार है,
 मनसा कौ फल दैत, नाम लैत, कृष्ण दास,
 ऐसी रत्न दानी तुही पवन कुमार है॥१३॥

तेरे बिना पूजा पाठ जंत्र मंत्र तंत्र आदि,
 होत नहिं सिद्ध ऐसी अद्वरित बात है ।
 तेरी बिन कृपा जीव पावै न विग्राम कहें,
 तेरी कृपा पाय सर्व हाँम कुशलात है ॥
 आदि व्याधि सकल उपाधि के बिना सबों
 रवौज्यो तिहुँ लोक में न दूसरो दिखत है,
 जाइँ कान्ह पास कौन पूरे कृष्ण दास
 सब सुखराशि बीर तेरी करमात है ॥१५॥

जीव जस जगत रंगत राम रंग माँह ,
 जायें भक्ति भीर महावीर तेरी दृष्टि है ।
 जगत में रक्तात यह बात बात जात प्यारै ,
 अन्तर न जाने क एक इष्ट रति इष्टि है ॥
 आपनै सरस की सु आपही संभार को जै ,
 हरी जन शोक को सदा कृपा इष्टि है ।
 दिव्य गुण ग्राम राम तेरे द्वियं होत दिखै ,
 कृष्ण उर फुरै सद्गुणन की श्रुष्टि है ॥ १५ ॥

जै जै हनुमान की सुबान की सुजान की,
 सुशान की सुध्यान की सुकाम की सुसान की।
 जै जै बजरंग की सुअंग की सुदंग की,
 सुरंग के प्रसंग की सुमारजित भान की॥
 जै जै महावीर की सुशीत मतिवीर की,
 सुभीर के हरन भीर जन सनमान की।
 जै जै बलवान की सुजान सुखदान की,
 सुकृष्ण कवि रक्षक सुबीर के मुजान की॥१६॥

1. The first part of the book is devoted to a general
history of the country, and to a description of the
various tribes and nations which inhabit it. The
author has endeavored to give a full and accurate
account of the manners, customs, and language of
the people, and to show the progress of civilization
and the state of the arts and sciences. The second
part of the book is a description of the various
tribes and nations, and of the progress of civilization
and the state of the arts and sciences. The third
part of the book is a description of the various
tribes and nations, and of the progress of civilization
and the state of the arts and sciences.

मंगल की मूल सुख मूल शान्ति कीर्ति मूल,
 प्रेम प्रेम मूल अति पाप ताप तोड़ सी ।
 मोदसी विमोद सी प्रमोद सी प्रभाव देन,
 सर्व सुख गोदसी सुसौध के निचोड़ सी ॥
 गुरु के कृपा ते यह पाई सुख दाई नृप,
 कृष्ण कवि मालिखत अमृत करौड़ सी ।
 परमानन्द धाम अरु बुद्ध अभिराम ऐसी,
 पूरै मन काम हनुमन्त कृपा षोड़ सी ॥२६॥

158
The first part of the
manuscript is a
list of names of
the people who
were present at
the meeting of
the committee
on the 1st of
January 1858.
The names are
written in
the margin of
the text.

॥०३॥ क ह्यः ॥०॥

जाने नित नूतन गुण गाये भगवत ही के,
 प्राकृति नरेसन की कौरति न भनि हैं।
 भषि हैं सुचारु षट् अष्ट दस सत्य सन्त,
 प्रभु के सम्बन्ध बिनु कथन पेत कणि हैं॥
 कणि हैं न जीवन उद्धारक सु चित्तामणि,
 रघुपति गुणानुवाद बिना मुख फणि हैं।
 परमानन्द पुकार कहों जाहिर न दुरी बाल,
 सुजान सराहें सदी सोई कविमणि हैं॥१८॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र नमस्कृतम् ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र नमस्कृतम् ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र नमस्कृतम् ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र नमस्कृतम् ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र नमस्कृतम् ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र नमस्कृतम् ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र नमस्कृतम् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

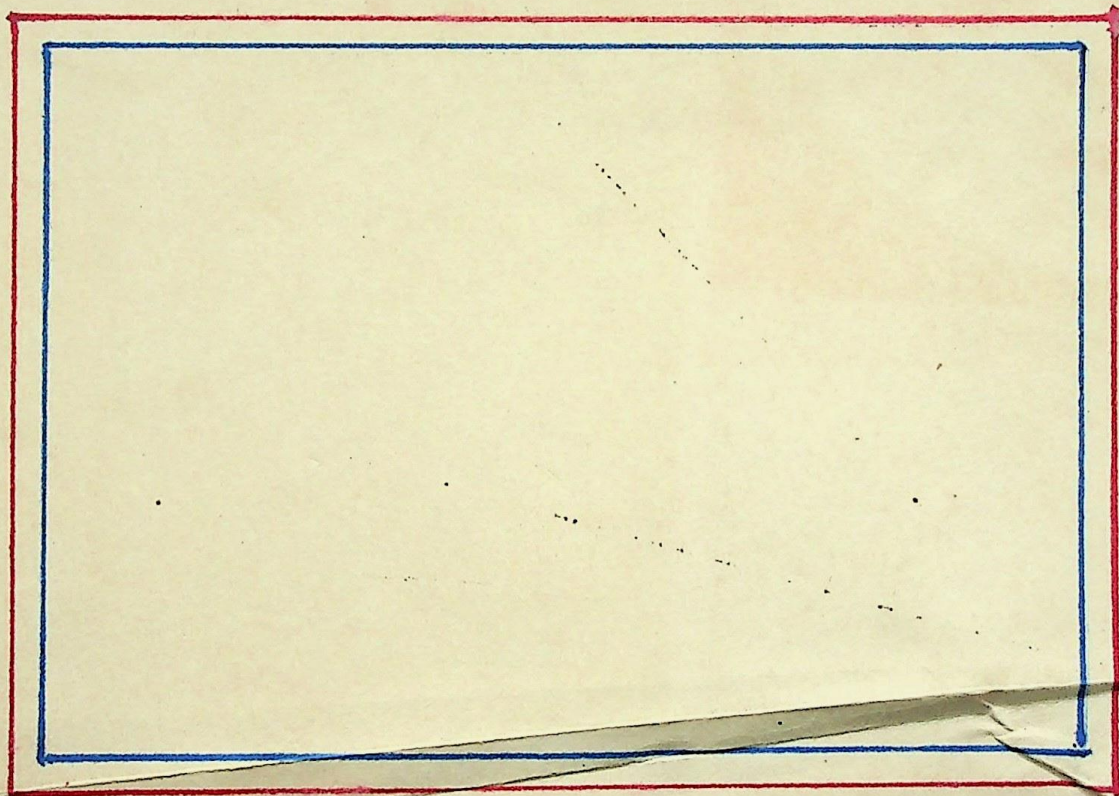
— : दोहा : —

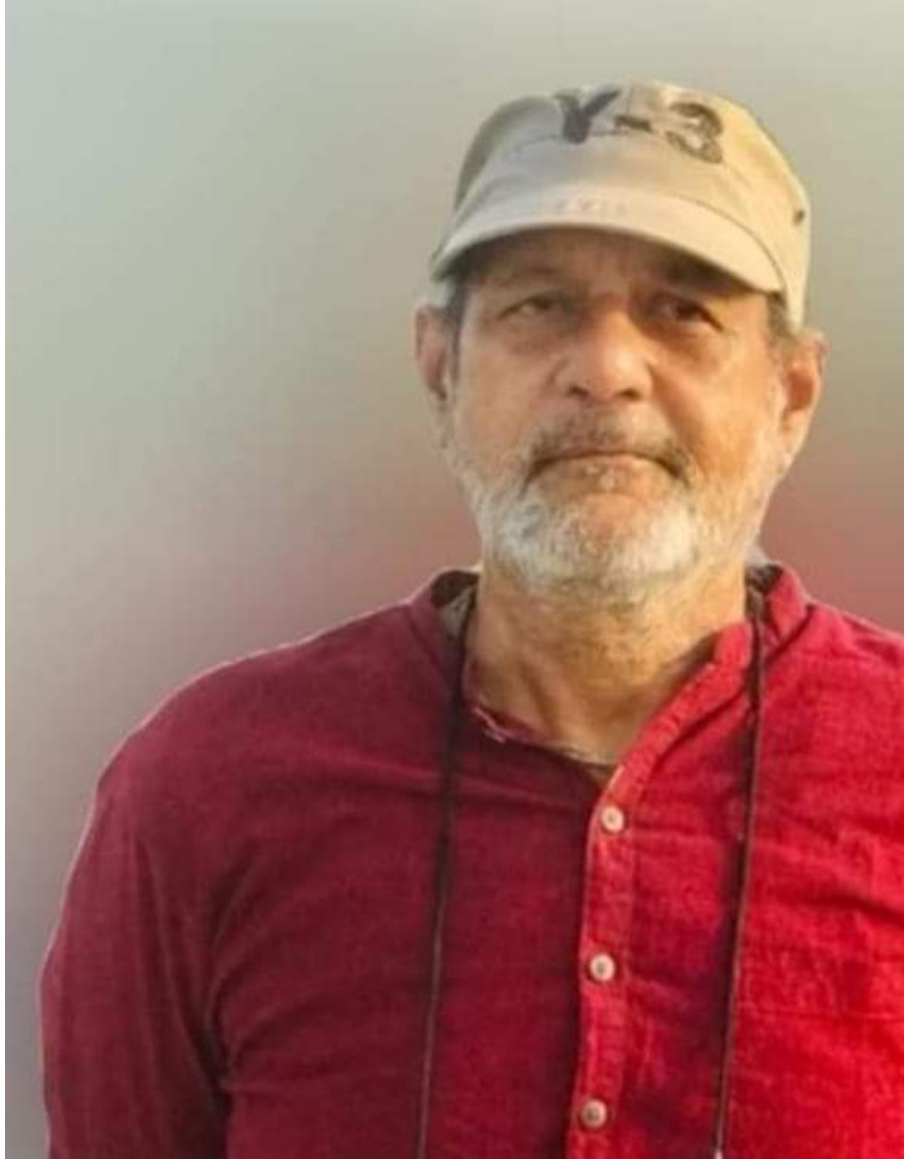
प्राकृत गुण वर्ण नहीं सुन भी मोहि आनन्द ।
निरभर हरि जस गावते, कविमणि परमानन्द ॥

इति श्री हनुमन्त कृपा षोडशी
कवि मणि कृष्णदासजी

कृत
समाप्त

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वदा ॥
— : श्री ११ : —





This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript. Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernalia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital Preservation Trust and
Sarayu Trust Foundation.